जयप्रकाश

KUNHISANKARAN M. K.
Final M. Sc. (Maths)

आज़ादी ही जीवन
आज़ादी ही अमृत
लाख-करोड़ों की इच्छा
बनी आज़ादी जनता की।

निष्ठुर मर हत्यारे
क्रूर अधिकारी भारत में
करके हज़ारों की नरहिंसा
डाले बन्धन में नेताओं को।

स्वतंत्रता का मधु पीने
अभीलाषी हो जन-शक्ति
जाग्रत किया जनसेवक
लोकनेता जकप्रवाश ने।

देकर सब को नव जीवन
आज़ादी सारे देश को
अमर बने दुनिया भर में
जननेता जयप्रकाश।

सपना मेरा टूट गया

G. R. JAYAKUMAR
Final B. Sc. (Chemistry)

मन्द हवा के झोंकों में सिर के बाल लहराने लगे। आँखें उदास होने लगीं। मन कहीं कहीं भटकने लगा।

ओह! यह कैसी ज़िन्दगी है। दिन रात कमरे में बैठे रहना है। अब पाँच बज गया है। मन कहता है कि बाहर थोडा घूम आऊँ। लेकिन..... लेकिन कल परीक्षा है न। बहुत ज्यादा पढना है। अब क्या करू? किताब लेते ही नींद आ रही है।

कितनी सुन्दर प्रकृति है। पश्चिमी आकाश में सूर्य की किरणें बादलों की स्याही में सुन्दर चित्र खींच रही हैं। बरसात शुरू होने से पेड पौधों में एक नया उन्मेष छाया है। पेड पत्ते मस्ती में हवा में झूम रहे हैं। चिडियों के कलरव में आस पास गूँज रहा है। प्रकृति की इस अलौकिक सुन्दरता में विलयित होने को मन ललचने लगा।

निद्राविहीन रातों में किताबों को साथी बनाए कितने दिन हुए! यह सब क्यों? किस लिए?

एक बार मुझे भी जिन्दगी के अनुस्यूत प्रवाह में तैरना पडेगा। अंधकार में तैरते-तैरते कहाँ पहुँचूंगा? बचपन में पिताजी के हाथ पकडकर स्कूल जाते समय वे कहा करते थे —"बेटे, तू आगे की ओर अच्छी तरह देखकर चल, कहीं न गिर"। लेकिन अब हाथ पकडकर संभालने के लिए वे नहीं रहे।

आँखें धीरे धीरे झपकने लगीं। मन ऊँचा उडने लगा। चिडियों की तरह स्वच्छन्द विचरण करने लगा। मस्त हवा में उडना खूब अच्छा लगा। लगा कि मैं बादलों के पास पहुँच रहा हूँ।

अरे!.....यह कौन मेरा नाम लेकर पुकार रही है? यहाँ कौन लडकी मेरा नाम जानती है। इस कालेज में मेरे निकट परिचय की कोई लडकी नहीं है। मुडकर देखा तो एक खूबसूरत लडकी खडी है। आँखें आँखें से मिलने पर उसने सिर नीचा किया।

यह क्यों मेरे पास आयी? मैं ने उसकी ओर अनोखी दृष्टि से देखा।

वीणा की आवाज में उसने पूछा—"सतीश, आप ऐरा जी के भाई हैं न?"

कैसी चालाक लडकी है। मेरा ही नहीं मेरी बडी बहन का नाम भी यह जानती है। बडे संकोच के साथ मैं ने जवाब दिया—

"हाँ मैं लक्चरर ऐरा जी का भाई हूँ"।

"मेरा नाम रजनी, ऐरा टीचर की स्टुडेन्ट हूँ। कल ऐरा टीचर ने होस्टल जाते वक्त आपके बारे में कहा था"।

"अच्छा !" अजीब सा लगा।

"टीचर से आपके बारे में सब कुछ मालू हुआ"। इतना कहकर वह हंसी। "अच्छा, चलती हूँ, फिर मिलेंगे।"

मैं अवाक रह गया। वह लड़की कितनी खूबसूरत है। वे आँखें, वे पलकें कोमल गुलाबी गाल, घुंघराले काले काले बाल, झुका हुआ सिर सब मन से ओछल नहीं होते। नीली साडी में वह परी सी प्यारी लगती थी। उसका रूप-रंग दिल में तूफान मचाने लगा।

छिः ! मैं यह क्या सोच रहा हूँ। एक मामूली लडकी को सिर्फ एक बार देखने से यों पागल होना कितनी बडी मूर्खता है। स्त्री की सुषमा आँखों की मृगमरीचिका है। उसमें डूब जाएँ तो आँखें हमें भटका देंगी। मैं उस लडकी को आगे कभी नहीं देखूँगा। कभी भी उससे बातें नहीं करूँगा।

अगले दिन शाम को 'केमिस्ट्री लाब' से बाहर निकलते ही देखा कि वह सामने खडी है। मन में बडा संघर्ष हुआ–" उसकी ओर देखूँ या नहीं ! नहीं .....मैं नहीं देखूँगा।"

किन्तु किसी अदभुत आवेग ने सिर उठाकर उसे देखने की प्रेरणा दी।

"सतीश"–आत्म नियंत्रण की सभी दीवारों को तोडकर उसकी मीठी आवाज मन की गहराई में लहराने लगी।

मैं ने कहा–"कल बहन ने मुझ से कहा था कि रजनी उनके क्लास की सब से अच्छी, समझदार लडकी है।" तुरन्त मुझे अपने पूर्व निश्चय की याद आयी। चाहा कि यह सौंदर्य मुझे कहीं भटका न दे।

मैं ने खोखले नेत्रों से उसकी ओर देखकर मुस्कुराने का प्रकास किया।

जाते समय वह मेरी ओर देखकर मुस्कुरायी। उसका कुलीन चोहरा और विनम्र भाव मैं भूल नहीं सका।

उसे भूल जाने की मैं ने भरसक कोशिश की। चाहा कि उसे फिर कभी न देखूँ। फिर भी न जाने क्यों, वह बार-बार मेरे जीवन में आना चाहती है।

दो वर्ष बाद कालेज से विदा लेने का समय आया। इन दो वर्षों में रजनी ने कभी भी मेरे मन को ठेस पहुँचाने वाला कुछ भी नहीं किया। एक स्त्री के प्रति होनेवाला वासनामय नहीं, प्रत्युत एक बहन के प्रति होनेवाला पवित्र प्रेम ही उसके प्रति मेरे मन में था।

एक इतवार के दिन वह हमारे घर आयी। विदा माँगते समय होनेवाले दुख के स्थान पर खुशी ही उस के चेहरे पर चमकती थी। हँसती हुई वह मेरे पास आयी।

"सतीश, आगे शोध कार्य करने जाएँगे आप ?"

"हाँ, रिसर्च के लिए कानपुर जा रहा हूँ।"

"रजनी का इरादा क्या है ?"

"मैं लक्चरर बनने की कोशिश में हूँ।"

"रजनी को 'रैंक' है न, इसलिए जलदी कहीं। नौकरी लग जाएगी"–मैं ने कहा।

यह सब सुनकर मेरी बहन ऐरा जी ने कहा–"तुम निश्चिन्त रहो। प्रिन्सिपल साहब से तुम्हारे बारे में कहूँगी। तुम्हें इसी कालेज में नौकरी मिल जाएगी।"

रजनी बडे विनय के साथ हंसी। फिर मेरी ओर देख का उसने कहा–"मैं प्रार्थना करती हूँ कि सतीश को बहुत जल्दी डाक्टरेट मिले।"

फिर उसने विदा माँगी।

मैं ने कहा— "हम फिर भी कहीं न कहीं मिलेंगे।" रजनी की आँखे चमकीं। सिर झुकाकर वह धीरे धीरे चली गयी।

मेरे दिल में विषाद छा गया। कहीं से आयी एक लडकी कैसे मेरे हृदय में घर कर गयी। जिन्दगी

के निर्बाध प्रवाह में ऐसी कितनी लड़कियों देखना पड़ेगा ? इन सब को दिल में स्थान देना निरी मूर्खता है।

मुझे कानपूर में आये दो महीने हुए। मालूम हुआ कि रजनी मेरी बहन के टिपार्टमेंट में लक्चरर बन गयी है। मैं ने उसे बधाइयाँ देते हुए पत्र लिखा।

एक दिन मैं 'लाब' में परीक्षणों में मगन था। किसी ने आकर कहा कि मुझे एक तार है। मैं ने उसे लेकर टेबल पर रखा और फिर काम में डूब गया।

शाम को होस्टल जाते समय ही तार की याद आयी। खोलकर पढा, एकदम चकित हुआ– "रजनी किसी दुर्घटना में पडकर आस्पताल में नाजुक अवस्था में पडी है। वह मुझे देखना चाहती है।"

दिल में एक आघात सा अनुभव हुआ। पैर थर थर काँपने लगे। कानों में एक साथ कई आवाजें गूंजने लगीं।

मैं तुरन्त निकला। आस्पताल पहुँचते ही लगा कि मेरा दिल फट रहा है। मेरे वहाँ पहुँचने के कुछ क्षण पहले रजनी के प्राण उड गये थे।

हाय री विधि ! तू इतनी निष्ठूर है ?

इस अभागे को एक बार देखने में भी रजनी विफल हुई।

"रजनी ! तुम मुझे देखना चाहती थी लेकिन ..... पहले मैं ने तुझे देखना गलत समझा। लेकिन अब मैं समझ गया कि मैं तुझे कितना चाहता हूँ। अब तुम मेरे लिए कभी नहीं मुस्कुराएगी ? सब विधि का खेल है।"

दिमाग में तूफान उठता है। विषाद के तीक्ष्ण शरों से विदीर्ण हृदय की चोट से खून बहता है।

लंबे दस वर्ष बाद। जवानी के वे बीते हुए कल सपने जैसे लगते हैं। यौवन सुलभ दुर्बलता और अलहडता के वे दिन कितने निराले थे। यों सोच रहा था कि तीन साल का मेरा बेटा पास आकर शिकायत करने लगा–

"पप्पा, रजनी दीदी मुझे मारती है, वह मुझे दौडाती है।"

मैं ने उसे गोद में उठा लिया और पुचकारते हुए पुछा– "क्या हुआ बेटे, बोल।"

"पप्पा, देखो रजनी दीदी ने मेरा चेहरा उसकी ओर यों घुमाया।"

रजनी मेरी बेटी है। मैं ने किस प्रेरणा से अपनी प्रथम संतान को रजनी नाम दिया !

"एक रजनी थी जो मेरे दिल की रानी थी। लेकिन यह.....यह रजनी मेरे दिल की टुकडी है।"

सोचते सोचते आँखें डब डबा आयीं। बेटे ने पूछा– "पप्पा आप रोते क्यों हैं, रजनी दीदी ने मुझे खूब सताया। फिर भी मैं नहीं रोया।"

कोई भयानक आवाज़ सुनाई पडी। मैं चकित होकर चारों ओर देखा। अरे, मैं कहाँ हूँ। मैं क्या पन्थर बन गया हूं। एक बार आँखें मसलकर मैं ने बाहर की ओर देखा–

बाहर मूसल धार वर्षा है। बादल गरजते हैं, बिजली चमकती है। तेज हवा चल रही है। हाथ में जो किताब थी वह नीचे पडी है। मैं आँखें खोलकर चारों ओर देखा– " यह सब क्या है ! केवल सपना !!

नीचे से किताब उठाकर मैं सोचने लगा। मैं अब तक क्या कर रहा था। परीक्षा कल सबेरे है। सिर में चक्कर सा आने लगा।

तब कहीं से रेडियों का यह स्वर मन्द हवा में बह आया–

"सपना मेरा.....टूट गया।" □